'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ११० } वाराणसी, शनिवार, २६ सितम्बर, १९५९ { पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

कटरा (जम्मू) ७-९-'५९

ध्यान, धर्म और साधना की बातें करनेवाले पहले शरीर-श्रम करें

कश्मीर में हमने बहुत दफा कहा है कि दुनिया के मसले सियासत से हल नहीं होंगे, रूहानियत से हल होंगे। रूहानियत याने अध्यात्म। अध्यात्म एक वस्तु है और जिसे हम मजहब कहते हैं, पंथ कहते हैं, वह दूसरी वस्तु है। जैसे सियासत से मसले हल नहीं होंगे, वैसे ही मजहब से भी मसले हल नहीं होंगे। सियासत की बात लोगों के ध्यान में आ गयी है, किन्तु अभी तक मजहबवाली बात ध्यान में नहीं आयी है। लोगों के समझ में आये या न आये, मैं अपना विचार रखता जाता हूँ। क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि हवा में गया हुआ शब्द अपना काम किये बिना जाया नहीं जायगा। खैर, आज मैं इस योगाश्रम को ध्यान में रखकर बोलता जा रहा हूँ।

ध्यानयोग का रहस्य

यह योगाश्रम (विश्वायतन योगाश्रम) कहा जाता है। इसका उद्देश्य है कि यहाँ लोग योग की तालीम पायें और हिन्दुस्तान-भर में जाकर सबको योग-पद्धति से वाकिफ करायें ताकि लोगों का आरोग्य सुधरे और साथ-साथ कुछ आध्यात्मिक भावना भी पैदा हो। यहाँ बीमार लोग अच्छे हों, ऐसी भी व्यवस्था है, बहुत अच्छी बात है। लेकिन अब मैं विचार की सफाई के लिए कुछ बातें कहना चाहता हूँ।

एक भाई ने कहा कि हम आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ना चाहते हैं, इसलिए ध्यान कर रहे हैं। हमने कहा कि ध्यान का अध्यात्म के साथ कोई खास ताल्लुक है, ऐसा हम नहीं मानते। कर्म एक शक्ति है, जो अच्छे-बुरे स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ के काम में आ सकती है। उसी तरह से ध्यान भी एक शक्ति है, जो उन पाँचो कामों में आ सकती है। कर्म स्वयमेव कोई आध्यात्मिक शक्ति नहीं है, वैसे ही ध्यान भी स्वयमेव कोई आध्यात्मिक शक्ति नहीं है। कर्म करने के लिए मनुष्य को दस-पाँच चीजों की तरफ खूब ध्यान देना पड़ता है। वह भी एक तरह का विविध ध्यानयोग ही है। चर्खा कातना हो तो इधर पहिये की तरफ ध्यान देना पड़ता है तो उधर पुनी खींचने की तरफ। इस दोहरी प्रक्रिया के साथ-साथ सूत लपेटने की तरफ भी ध्यान देना पड़ता है। तभी सूत कतता है। बहनों को रसोई करते समय कई बातों की तरफ ध्यान देना पड़ता है। इधर चावल पक रहा है तो उसे देखना, उधर आटा गूँधना, रोटी बेलना, सेंकना, तरकारी काटना, लकड़ा ठीक से जल रही है या नहीं, यह देखना, आदि-आदि सभी एक साथ करना होता है। इस तरह सब काम करनेवाली बहन का रसोई के काम में ध्यान नहीं है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। उसमें विविध ध्यानयोग है।

कर्म करना सांसारिक नहीं

ध्यान करते समय हम अनेक चीजों की तरफ से ध्यान हटाकर एक ही चीज की तरफ ध्यान देते हैं। जैसे अनेक चीजों की तरफ एक साथ ध्यान देना एक शक्ति है, वैसे ही एक ही चीज की तरफ ध्यान देना, यह भी एक शक्ति है। जैसे कर्मशक्ति का पंचविध उपयोग होता है, वैसे ही ध्यानशक्ति का भी होता है। लेकिन हिंदुस्तान के लोगों के मन में अक्सर एक गलतफहमी रही है कि कर्म करना सांसारिकों का, परिवारवालों का काम है और ध्यान करना अध्यात्म की चीज है। इस गलत खयाल को मिटाना बहुत जरूरी है।

काम-काम में भेद

ध्यान का अध्यात्म के साथ संबंध जोड़ा जा सकता है और नहीं भी जोड़ा जा सकता है। अगर संबंध जोड़ा जाय तो ध्यान आध्यात्मिक चीज बनेगी, न जोड़ा जाय तो नहीं बनेगी। हमने खेत में कुदाली चलायी, कुँआ खोदने का काम किया, कताई, बुनाई, रसोई, सफाई आदि तरह-तरह के काम भी किये। बचपन में हमारे पिताजी ने हमसे रंगाने का काम, चित्रकला, होजिअरी वगैरह के काम भी करवाये थे। वह सब करते समय हमारी यही भावना थी कि हम यह एक उपासना कर रहे हैं। उसमें हम अपने को मानवमात्र के साथ, प्राणीमात्र के साथ, कुदरत के साथ जोड़ते थे और इन सबका मरकज (केन्द्र-स्थान) जो परमात्मा कहलाता है, उसके साथ भी जोड़ते थे। यह हमारा अनुभव है। चित्त में बैठे हुए गलत संस्कार को निकालने में जिस तरह नामस्मरण का, जप की प्रक्रिया का उपयोग हो सकता है, उतना ही उपयोग हमने खेती का किया है। किसान खेत में काम करते हैं तो उन्हें वह अनुभव नहीं आता, जो हमें आता है। बहनें पैसे के लिए सूत कातती हैं तो वह

www.vinoba.in

कताई रोटी के साथ जुड़ी हुई है, इसलिए उन्हें भी वह अनुभव नहीं आता। हमारी कताई आध्यात्मिक होती है, क्योंकि वह परमात्मा के साथ जुड़ी हुई है।

गाढ़ निद्रा और ध्यान

इसी तरह से ध्यान भी दोनों पक्षों में पड़ सकता है, इस बात का एहसास हिंदुस्तान के लोगों को अभी तक नहीं हुआ है। इसीलिए यहाँ पर यह माना गया है कि कोई ध्यान करता है तो आध्यात्मिक साधना करता है। परंतु वैसे देखा जाय तो गाढ़ निद्रा से बढ़कर कोई ध्यान नहीं हो सकता। हम अपना अनुभव बता रहे हैं कि गाढ़, निःस्वप्न, निर्दोष निद्रा से जितना उत्तम विकास होता है, उतना निर्विकल्प समाधि छोड़कर दूसरे किसी मामूली काम में नहीं होता है। निःस्वप्न, निर्दोष निद्रा एक आध्यात्मिक वस्तु हो सकती है और वैसे ही यह एक भौतिक वस्तु भी हो सकती है। जानवर निद्रा लेता है तो वह आध्यात्मिक वस्तु नहीं है। लेकिन निष्काम कर्मयोगी दिनभर काम करके सो जाता है तो उसको निःस्वप्न, निर्दोष निद्रा में वे सारे अनुभव आ सकते हैं, जो निर्विकल्प समाधि छोड़कर दूसरे किसी काम में नहीं आते।

अध्यात्म का निकटतम पड़ोसी

इस आश्रम को हम एक साधना-केन्द्र बनाना चाहते हैं तो उसके लिए क्या जरूरी है और क्या जरूरी नहीं है, इसका ठीक एहसास हो, इसीलिए मैं यह कह रहा हूँ। सबके साथ हमारा प्रेम का सम्बन्ध जुड़े, हममें अहंता न रहे, आत्मा का किसी तरह का संकोच न हो, हमारे पास छिपाने की कोई चीज न रहे, हम और सारी सृष्टि एकरूप बन जायँ, इसलिए शरीर को भी तालीम देने की जरूरत है। नेति, धौति, बस्ती इत्यादि पंच-कर्म किये, इतने से अध्यात्म नहीं होता है। वे चीजें शरीर की स्वच्छता के लिए सहायक होती हैं, लेकिन अध्यात्मविद्या के लिए सबसे ज्यादा अनुकूल और सबसे ज्यादा नजदीक अगर कोई चीज है तो वह है उत्पादक शरीर-परिश्रम, ऐसा मैं अपने अनुभव से जाहिर करना चाहता हूँ। मनुष्य को भूख लगती है। वह भूख परमेश्वर की प्रेरणा है, जो हमें अध्यात्म में किस दिशा की ओर जाना चाहिए, यह बताती है।

हम अपना सब कुछ समाज को देते हैं। शरीर की शक्ति भी उसीकी सेवा में लगाते हैं, उत्पादक श्रम करते हैं तो भूख के साथ जो पाप जुड़ते हैं, वे कुल के कुल खत्म हो जाते हैं। मनुष्य भूख से पीड़ित होकर खाता है तो उस खाने के साथ कई पाप जुड़े हुए रहते हैं। उन सब पापों से मुक्ति पाने का आसान रास्ता यह है कि हम अपने हाथ से परिश्रम करके अन्न उत्पादन करें। 'अन्नं ब्रह्मेति' शास्त्रकारों ने कहा है। उत्पादक परिश्रम करने से पृथ्वी, आकाश, अग्नि, सूर्य, वनस्पति, जल, पर्वत आदि जो देवता हैं, उन सबके साथ सम्पर्क बनता है। उन सबकी हम सेवा करते हैं और सेवा के फलस्वरूप जो मिलता है, वह समाज को अर्पण करके समाज की तरफ से प्रसाद रूप से जो ग्रहण करते हैं, वह कुल प्रक्रिया अध्यात्म के लिए साधक है। इतने से ही अध्यात्म बनेगा, ऐसी बात नहीं है। लेकिन वह प्रक्रिया अध्यात्म के लिए ज्यादा मददगार है, बनिस्बत आसन, प्राणायाम के।

सबसे ऊँचा योग

संस्कृत शब्दों में जो खूबी होती है, वह गहराई में पैठने पर ही मालूम होती है। संस्कृत में एक शब्द है, 'उद्योग'। उद् योग याने ऊँचा योग। अगर यह भूख न होती और उसके लिए शरीर-परिश्रम करने की प्रवृत्ति न होती तो इन्सान अनेक दुर्गुणों से अपने को नष्ट कर डालता। इसलिए उद्योग याने हमारे लिए सबसे बड़ा योग है। परिश्रम करके हम जो कुछ पैदा करते हैं, वह समाज को समर्पण करना चाहिए। जहाँ समर्पण की भावना आयी, वहाँ वह चीज चाहे कर्म हो या ध्यान, आध्यात्मिक बन जायगी। जिसका समर्पण के साथ संबंध नहीं रहा, वह आध्यात्मिक चीज नहीं रहेगी। अध्यात्म के लिए समर्पण अनिवार्य है।

विचार की यह सफाई हिंदुस्तान में बहुत जरूरी है। नहीं तो हम ऐसी चीजों में फँस जाते हैं कि उसमें और कोई लाभ तो होता होगा, परंतु पारमार्थिक लाभ नहीं होता। हृदय की शुद्धि, व्यापकता और समाज के लिए जरूरी काम करें, हम परमेश्वर को समर्पित हों, इतनी चीजें अध्यात्म के लिए जरूरी हैं। इसीसे दुनिया के मसले हल होंगे।

मैंने कहा कि रूहानियत से मसले हल होंगे तो किसीने यह समझ लिया कि अब ध्यानयोग किया जायगा, उससे सिद्धियाँ, शक्तियाँ प्राप्त होंगी और फिर जैसे आज एटम बम फेंका जाता है, वैसे ही वे शक्तियाँ फेंकी जायँगी, लेकिन बात ऐसी नहीं है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप मेरे विचार को ठीक समझ लें। ◆

प्रार्थना-प्रवचन

दोमेल (जम्मू) ८-९'-५९

मैं नरसमूह में रहनेवाले 'नारायण' की सेवा के लिए घूम रहा हूँ

हम आठ साल से मुख्तलिफ सूबों में घूम रहे हैं। इस प्रकार घूमते रहने से हमें बहुत तजुरबे हासिल हो रहे हैं। हम जहाँ-जहाँ भी गये, वहाँ-वहाँ हमने हमेशा ही प्रेम का अद्भुत दर्शन देखा। पहले जम्मू-कश्मीर के बारे में मुझे कोई कल्पना नहीं थी। मैं यहाँ आया भी नहीं था। दूर-दूर से आदमी सुनता है, लेकिन उससे कोई खास जानकारी नहीं मिलती। हमें यहाँ आने पर जो दर्शन हुआ, उससे बहुत खुशी हुई।

यहाँकी सरकार ने जमीन की हद बाँध दी है। सीलिंग हो जाने से लोगों के पास अच्छी, लेकिन थोड़ी जमीन बची है। इसके बावजूद हमने यहाँ जमीन माँगी और लोगों ने अपनी अच्छी जमीन में से प्रेम-पूर्वक दान दिया है। हम इसे बहुत बड़ी बात मानते हैं।

जरासंध पर भगवान की कृपा

कटुआ जिले में हम एक जगह गये। वहाँ जरासंध नाम के एक भाई से भेट हुई। हम यह नाम भूलनेवाले नहीं हैं। आजकल अक्सर यह नाम न रखकर कृष्ण नाम रखते हैं। कृष्ण नाम पर तो कृष्ण की कृपा होती ही है, पर जरासंध पर भी कृष्ण की बड़ी कृपा है। जरासंध और उनके भाई के पास ४४ एकड़ जमीन थी। एक दिन भगवान की कृपा से उनके मन में यह विचार आया कि अपने गाँव में एक आश्रम हो जाय तो अच्छा होगा। जैसे गृहिणी के बिना घर नहीं, वैसे ही शीलवान, सज्जन कार्यकर्त्ता के बिना गाँव की क्या शोभा है? उसी समय यानी हमसे पहले उनके गाँव में पदयात्रा करते-करते दो कार्यकर्त्ता पहुँचे। उन दोनों में से

www.vinoba.in

एक भाई वहीं सख्त बीमार हो गये। एक डॉक्टर और एक बहन की खिदमत से वे मरते-मरते बचे। उनके साथ पदयात्रा में एक यू० पी० के भाई थे, जो आजकल हमारे साथ हैं। उन्होंने तय किया है कि अब वे–जरासंध भाई जो आश्रम बनाना चाहते हैं–वहीं रहकर सेवा करेंगे। आश्रम के लिए जमीन तथा तरह-तरह की मदद देनेवाला और आश्रम में काम करनेवाला कार-कून भी तैयार हो जाता है! यह भगवान की कृपा नहीं तो और क्या है? भगवान बड़ा दयालु है।

पदयात्रा से लाभ

लोग हमसे बार-बार पूछते हैं कि आप पदयात्रा छोड़कर दूसरे जल्द साधनों का उपयोग क्यों नहीं कर लेते? मगर ऐसा पूछनेवाले यह नहीं समझते कि लोगों के पास पहुँचना नामुमकीन हो जाता, अगर हम हवाई जहाज से घूमते। पदयात्रा के कारण हम शान्ति से गाँव-गाँव पहुँचते हैं और सब लोगों के साथ बातचीत कर सकते हैं। आज जो काम हो रहा है, वह भी पदयात्रा के कारण ही हो रहा है। हम पैदल गाँव में जाते हैं तो गाँव के लोगों को लगता है कि "हाँ! बाबा हमें मदद करने आया है"। लोगों के पास उनके जैसे बन-कर पहुँचने से ही दिल में प्रवेश होता है और काम होता है। वह ऐसा काम होता है, जिसे नापा नहीं जा सकता। गीता में कहा है, 'जो सब दूर फैलनेवाला तत्त्व है, उसका निर्देश किया ही नहीं जा सकता।' वैसे ही पदयात्रा में जो लाभ होते हैं, उन्हें हम दिखा नहीं सकते हैं। खिले हुए फूल की सुगन्ध महसूस कर सकते हैं, पर क्या दिखा भी सकते हैं? शास्त्र में बताया है: "पुण्य कर्म की खुशबू दूर तक हवा में बहती रहती है, लेकिन मालूम नहीं पड़ता है।"

शब्दो नित्यः

"शब्दो नित्यः"। शब्द नित्य होता है, टिकता है। इसका अन्दाजा पहले नहीं होता था, लेकिन अब—जब कि विज्ञान की बदौलत रेडियो में शब्द पकड़ा जाता है—यह ध्यान में आ गया है। गांधीजी को गये १२ साल हो रहे हैं। लेकिन अभी भी उनके शब्दों के रेकार्ड हमारे पास हैं। मरे हुए आदमी की आवाज हम सुनते हैं। इसपर से यह खयाल आता है कि कृष्णार्जुन-संवाद भी पकड़ा जा सकता था, बशर्ते कि उस जमाने में यह खोज हुई होती। उस जमाने में यह यन्त्र नहीं था, इसलिए उनकी आवाज पकड़ी नहीं गयी। लेकिन उनकी आवाज हवा में फैली है। अन्दर जो दूसरे कान होते हैं, उन कानों से वह आवाज सुनी जा सकती है। इसी तरह पुण्य कर्म हमेशा हवा में रहते हैं। वे खत्म नहीं होते हैं।

मुझे कौन घुमा रहा है?

हमसे कुछ लोग पूछते हैं कि यहाँ बड़े-बड़े ऋषि, मुनि, सन्त, साधु सब हो गये। उन्होंने समाज को बहुत सिखाया। लेकिन उनसे कुछ बना नहीं तो आपसे क्या बनेगा? मगर मैं कहता हूँ कि वे जो महापुरुष हो गये हैं, हम उन्हींके चरण-चिन्हों पर चल रहे हैं। वे पुण्य पुरुष हुए, उन्होंने काम किया, इसीलिए हम आज इन्सान हैं। अगर वे न होते तो हम जानवर होते! ऐसे तो इस समय भी हममें कुछ जानवर का माद्दा है। छीना-झपटी का जो काम है, वह जानवरपना नहीं तो और क्या है? फिर भी अब समझ-बूझकर अपनी चीज का दान देनेवाले जरासंध जैसे लोग हैं, यह किसकी कृपा है? उन्हीं पुण्य-पुरुषों की ही है।

कश्मीर-वैली में मुसलमान भाई कहते थे कि यह ऋषि-मुनियों का देश है। यह देश कश्यप ऋषि ने बनाया है। तमिलनाड के ग्रन्थों में 'कॉस्पियन सी' याने कश्यप समुद्र का जिक्र आता है। इसका मतलब यह है कि कश्मीर से कॉस्पियन तक कश्यप ऋषि का पराक्रम चलता था। ये बातें हमने सुनीं। रूप से नाम बड़ा है। नाम से पुण्य फैलता है। मुझे घुमा कौन रहा है? पुराने ऋषियों से लेकर महात्मा गांधी तक सारे पुण्य पुरुष ही मुझे घुमा रहे हैं। ऐसे मेरी कोई हस्ती नहीं है। यह उनकी करतूत, उनकी ताकत है, जो मैं घूम रहा हूँ।

लोग कहते हैं कि यह कलियुग है। लेकिन मैं कहता हूँ यह 'कलियुग' नहीं है। हम जो युग बनायेंगे, वही युग होगा। 'कलियुग' की कल्पना करते हैं, लेकिन इसी युग में महात्मा गांधी, अरविन्द जैसे महापुरुष और द्वापर में कंस जैसे लोग हो गये। 'द्वापर युग' याने दो कलि, 'त्रेता युग' याने तीन कलि, 'कृत युग' याने चार कलि—कल्प का नाप करनेवाला कलियुग।

कलियुग के भगवान

भागवत में कहा है कि 'काले खलु भविष्यन्ति नारायण-परायणाः'। कलियुग में लोग नारायण परायण होते हैं। भागवत में भगवान के अनेक नाम होते हैं। उनका एक-एक रूप ध्यान में लेकर नाम गाये जाते हैं। 'नारायण' याने नरसमूह में रहनेवाले भगवान। कलियुग में 'समूह में रहनेवाले भगवान' होंगे, यह जो भविष्यवाणी है, वह सही साबित हो रही है। मूर्तिपूजा के करने से ज्यादा भक्ति नरों में रहनेवाले भगवान की पूजा में, सेवा में है। पहले एक युग 'चिंतन' का युग था, एक युग ध्यान-धारण का था, एक युग मूर्तिपूजा का था। अब नारायण की, नरसमूह में रहनेवाले भगवान की पूजा करने का युग है। भगवान पवित्र हैं और पेड़ों में, पत्थरों में, पहाड़ों में रहते हैं। उनकी हम पूजा करें? इस युग में लोग समूह में रहनेवाले नारायण की पूजा करें और खूब पुण्य लें, यही इसका जवाब है।

हिन्दुस्तान की सभ्यता के प्रतीक : गांधीजी

हिन्दुस्तान को आजादी मिली है तो नया युग प्रारम्भ हुआ है। सूर्योदय की तैयारी होती है तो पक्षी गाते हैं चहचहाते हैं, उड़ने लगते हैं। कैसा हाल होता है? यह नये युग का आरंभ है। नये युग में हम गुलाम नहीं रहे, आजाद हुए। हमारी आजादी की लड़ाई एक अलग ढंग की थी। इसे कोई आकस्मिक घटना नहीं कहा जा सकता। बगैर शस्त्र के लड़ने की ताकत हमें चाहिए थी। ऐसी ताकत का काम गांधीजी ने किया। परमेश्वर हमेशा लायक मनुष्यों से काम करवाता है। गांधीजी लायक थे। हिंदु-स्तान की सभ्यता का आविष्कार उनमें हुआ था। उन्होंने हमें अहिंसा सिखायी। लेकिन हम कंबख्त ऐसे रहे कि हमने उस अहिंसा का पूर्ण पालन नहीं किया। फिर भी जो कुछ किया, उससे हमारी आजादी की लड़ाई का एक नया ढंग सामने आया। नया युग प्रगट हुआ। सूर्योदय हुआ। अब (स्वराज्य में) मेरे जैसे निकल पड़े हैं, उड़ रहे हैं, घूम रहे हैं।

नये युग की नवीन प्रेरणा

ईसा के बाद उनके शिष्य प्रचार के लिए निकले। उस समय 'साल' नाम का एक आदमी ईसा का दुश्मन था। वह ईसा के शिष्यों को सताता था, तंग करता था। एक दिन सपने में उसके

www.vinoba.in

पास भगवान गये और पूछने लगे 'साल ! साल ! तू मुझे क्यों तकलीफ देता है ?' साल ने कहा : "मैं आपको कहाँ तकलीफ देता हूँ?" भगवान बोले : "तू मेरे बच्चों को तकलीफ देता है, याने मुझे ही तकलीफ देता है।" साल पर उसका गहरा असर हुआ। इस घटना के बाद उसमें परिवर्तन हुआ, वह ईसा का भक्त बना और फिर उसका नाम साल से पाल हो गया। फिर पाल यूरोप में घूमा। वह ज्ञानी था। उसके कारण इसाई धर्म यूरोपभर में फैला।

ईसा के शिष्य तो अनपढ़ थे। मैं अनपढ़ नहीं हूँ। लेकिन उनको जो प्रेरणा थी, वही प्रेरणा मुझे घुमा रही है। जहाँ नया युग आरंभ होता है, वहाँ नयी प्रेरणा आती है। मैं नयी प्रेरणा लेकर ही आपके पास पहुँचा हूँ।

अनुकरण करनेवालों की दयनीय हालत

हमने इंग्लैंड का अनुकरण करके यहाँ भी वहाँकी जम्हूरियत लाने की कोशिश की है। लेकिन इंग्लैंड एक विकसित देश है और हम अभी अविकसित हैं। वहाँ अलग-अलग पार्टियाँ हैं, पर वे अपने देश का नुकसान किये बगैर काम कर सकती हैं और यहाँकी पार्टियाँ एक-दूसरे को तोड़ने का काम करती हैं, इससे देश की ताकत नहीं बन पाती। यह मैंने कश्मीर में बहुत अनुभव किया है। हिन्दुस्तान में जो स्वरूप है, वही यहाँ शुरू हुआ है। यहाँकी सब सियासी पार्टियाँ मुझसे मिलीं। मैंने उनसे साफ-साफ बातें कीं। पार्टीवालों को कई बार फटकारा और सुनाया भी। वे सुनते थे, अपनी गलती महसूस भी करते हैं, लेकिन उसे सुधार नहीं सकते हैं, ऐसी स्थिति है। इस हालत में देश का काम कैसे हो ? यही सब देख-सुनकर मैंने कहा है कि में पार्टी-पॉलिटिक्स छोड़कर आना होगा। सर्वोदय में आनेवाले चाहे थोड़े ही हों, लेकिन वे सच्चे और अच्छे हों तो बहुत काम हो सकता है।

आपका कर्तव्य

हम चाहते हैं, यहाँ ऐसे सर्वोदय-सेवक निकलें, जो घर-घर जायँ और बेजमीनों के लिए जमीन का छठा हिस्सा दान हासिल करें। वे लोगों से कहें कि गाँव में बेजमीन रहने देना हमारी तमद्दुन से खिलाफ है। इसलिए उन्हें उनका हक देना ही चाहिए। जहाँ-जहाँ सैलाब आया, वहाँ-वहाँ यह दूसरा सैलाब आने दीजिये। यह पुण्य का सैलाब है। यह सैलाब सिखा रहा है कि एक-दूसरे को मदद करो और मिल-जुलकर रहो तो आफत का मुकाबला कर सकोगे। यहाँ चारों ओर पहाड़ है। इसलिए बीच में पानी इकट्ठा होना लाजमी है। ऐसी स्थिति में गाँव-गाँव में लोग इकट्ठे होंगे तो लाभ होगा।

आज कुछ लोग शिकायत करते हैं कि सैलाब के कारण हमारा नुक्सान हुआ, पर हमें मदद नहीं मिल रही है। सरकार कहती है कि हम मनुष्यों के जरिये मदद पहुँचाते हैं। मदद ऊपर से आती है, परन्तु नीचे तक नहीं पहुँचती। इसलिए गाँववाले इकट्ठा होकर, मिल-जुलकर रहेंगे तो इस मदद का लाभ उठा सकेंगे।

हम कहते हैं कि 'भूदान' से दिल नरम होता है और ग्रामदान से दिल जुड़ता है। दिल सख्त हों तो जुड़ नहीं सकते हैं। इसलिए पहले दिल को मुलायम बनाना चाहिए। यही सुनाने के लिए हम घूम रहे हैं। यहाँ ग्राम-दान के लिए हवा अनुकूल है, इसमें हमें शक नहीं रह गया है। ◆◆

स्वामित्व समाज का हो, अभिक्रम व्यक्ति का

प्रश्नः—क्या व्यक्ति का स्वामित्व अच्छा है या समाज का स्वामित्व ?

उत्तरः—स्वामित्व समाज का रहे और अभिक्रम व्यक्ति का रहे। घर में एक मनुष्य अक्लवाला हो तो वह अपनी अक्ल का लाभ सभीको देता है। लेकिन आज समाज जिस हालत में है, उस हालत में लोग कहते हैं कि व्यक्ति के पास संपत्ति न रही तो उसका अभिक्रम नहीं रहेगा। मैं कहता हूँ कि 'प्रॉपर्टी' और 'प्रोप्रिएटी' को क्यों जोड़ते हो ? व्यक्तिगत सम्पत्ति न भी रही तो भी काम करना चाहिए, यही बात आज लोगों को समझानी है।

लोग कहते हैं कि श्री अरविन्द चालीस साल तक एक ही मकान में रहे। उनमें कितना निग्रह था ! मैं कहता हूँ कि उनमें क्या निग्रह था ? मैंने ऐसे कई लोग देखे हैं, जिन्होंने साठ साल तक घर नहीं छोड़ा। वे जिस घर में पैदा हुए, वहीं रहे और वहीं मरे। लेकिन श्री अरविन्द की विशेषता इसमें है कि उन्होंने वह एकाग्रता परमात्मा के लिए खर्च की। नहीं तो हिन्दुस्तान में अपना गाँव या घर न छोड़नेवाले कई लोग हैं। कोरापुट की एक सभा में हमने पूछा कि आपमें से कितने लोगों ने ट्रेन देखी है तो मालूम हुआ कि वहाँ उपस्थित एक हजार लोगों में से सिर्फ तेरह भाइयों ने ट्रेन देखी थी। जिस प्रामाणिकता से लोग अपने घर में काम करते हैं, उसी प्रामाणिकता सर्वोदय से श्री अरविन्द ने परमार्थ का काम किया, यही उनकी विशेषता है।

क्या यह जरूरी है कि मेरा खेत हो, तभी मैं काम करूँ ? मेरा खेत हो तो मैं कभी-कभी आलस भी कर सकता हूँ, लेकिन सामूहिक खेत बन जाय तो मैं सोचूँगा कि मैं काम करने नहीं गया तो अपने कर्तव्य में चूकूँगा। इसलिए मैं रोज जरूर काम पर जाऊँगा। हम अपनी यात्रा में रोज सुबह ठीक ४॥ बजे निकलते हैं। क्योंकि हम समझते हैं कि लोकसेवा के काम के लिए शरीर को हमेशा तैयार रखना चाहिए। अगर मेरे घर का काम होता तो ऐसी तैयारी की जरूरत न रहती। लेकिन सार्वजनिक कार्य में, पारमार्थिक कार्य में ज्यादा सतर्कता चाहिए।

हमने देखा है कि अक्सर माताएँ अकेली होती हैं। रसोई बनाने में आलस करती हैं। वे सोचती हैं कि अपने लिए क्या बनाना है ? थोड़ा-सा गुड़ और मूँगफली खा ली तो उनका काम हो गया। लेकिन वे बच्चे के लिए पूरी रसोई बनाती हैं। जिस तरह बच्चे के लिए काम करने में माँ का अभिक्रम है, वैसे ही समाज के लिए करने में भी है। आज वह बात नहीं है, यह सही है, लेकिन लोगों को ऐसा शिक्षण देना होगा। ◆

अनुक्रम

१. ध्यान, धर्म और साधना की··· कटरा ७ सितम्बर '५९ पृष्ठ ६८७
२. मैं नरसमूह में रहनेवाले 'नारायण'··· दोमेल ८ सितम्बर '५९" ६८८

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पताः गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी

www.vinoba.in